सूचना एवं जन–सम्पर्क विभाग, बिहार
प्रेस–विज्ञप्ति

संख्या– **76**
22/01/2026

जहां कभी जंगल और पत्थर थे,आज वहां लहलहाती खेती: महादेवा गांव की सफलता कहानी

सरकार से सहयोग मिलने के बाद 150 एकड़ जंगली जमीन को बना दिया खेती योग्य

आज प्रति एकड़ किसान की हो रही एक से डेढ़ लाख तक की कमाई, साथ में बनी आत्मनिर्भरता की नई राह

पटना दिनांक 22.01.2026:– मेहनत में ईमानदारी हो तो पत्थर भी सोना उगल सकता है। ऐसा कुछ साबित किया है रोहतास जिला अंतर्गत आने वाले महादेवा गांव के करीब 100 से अधिक किसानों ने। इन ग्रामीणों ने सरकार से सहयोग मिलने के बाद अपनी कड़ी मेहनत से वर्षों से बंजर की तरह वीरान पड़ी पहाड़ी और जंगली जमीन को कृषि योग्य बना दिया है। इस जमीन पर आज न सिर्फ किसान अत्याधुनिक खेती कर लाखों की कमाई कर रहे हैं बल्कि वह तेजी के साथ आत्मनिर्भर भी बन रहे हैं। यह सब आज से सात साल पहले राज्य सरकार की शुरू महात्वाकांक्षी जल-जीवन-हरियाली योजना के तहत किसानों को प्राप्त सरकारी सहयोग से संभव हो पाया है।

बिहार के रोहतास जिला अंतर्गत जमुहार पंचायत का महादेवा गांव आज बिहार और दूसरे राज्यों के लिए एक मिसाल बन गया है। यहां के किसानों को जल-जीवन-हरियाली अभियान के तहत ड्रिप (टपक) और स्प्रींकलर इरिगेशन (फुहार सिंचाई) से अत्याधुनिक खेती के लिए प्रेरित किया गया। आर्थिक बदहाली और बेरोजगारी की दंश झेल रहे करीब 100 किसानों ने जंगल में दशकों से बंजर की तरह खाली पड़ी जमीन पर टपक विधि से सिंचाई कर तरबूज और खरबूजा की खेती शुरू की। आज यह खेती महदेवा के साथ आसपास के क्षेत्रों में एक आंदोलन का रूप धारण कर चुका है।

किसानों का मानना है कि वह तरबूज और खरबूजा की खेती से प्रति एकड़ एक से डेढ़ लाख तक का मुनाफा आसानी से कमा ले रहे हैं। सरकार की ओर से बोरवेल सबमर्सिबल पंप का तोहफा मिलने के बाद गांव के 15 किसानों ने हाल ही में कलस्टर के रूप में स्ट्राबेरी की खेती शुरू की है। करीब 25 एकड़ भूमि में की जाने वाली इस खेती से किसान आज लाखों की कमाई कर रहे हैं। साथ ही यहां के किसान अब धान, गेहूं आदि फसलों का उत्पादन भी जैविक खाद के इस्तेमाल से ही कर रहे हैं। करीब 25 एकड़ भूमि में अत्याधुनिक तरीके से की जाने वाली सब्जी की खेती भी दूसरे गांव और जिलों के लिए एक प्रेरक कहानी बन चुकी है।

किसान बाइटः

1. जल-जीवन-हरियाली के तहत ड्रिप इरिगेशन पद्धति अत्याधुनिक खेती में वरदान साबित हुई है। करीब सात एकड़ भूमि में छह वर्षों से तरबूज और खरबूजे की खेती कर रहा हूं। इस खेती से पारंपरिक फसलों की तुलना में चार गुना अधिक मुनाफा मिल रहा है। खेती की आमदनी से बेटे को कोटा में मेडिकल की तैयारी और बेटी की दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाई करा पा रहा हूं।

आलोक कुमार, किसान महादेवा

2. ड्रिप इरिगेशन की सुविधा मिलने के बाद दो एकड़ भूमि में स्ट्राबेरी की खेती कर रहा हूं। पिछले तीन साल से शुरू अत्याधुनिक खेती से तैयार फसल को बेचने के बाद काफी अच्छी आमदनी हुई है। स्ट्राबेरी की खेती से ही कच्चे की जगह अब पक्का घर होने का सपना पूरा हो पाया है। यह खेती दूसरे किसानों के लिए भी प्रेरक बन चुकी है।

अनिश कुमार सिंह, किसान महादेवा।